(1) पियाजे का संज्ञानात्मक विकास:-

प्रतिपादक: जीन पियाजे - स्विटजरलैंड

Book's

(i) बालचिंतन की भाषा

(ii) बालक का मनोविज्ञान

(iii) बुद्धि का मनोविज्ञान

(iv) संसार के बारे में बच्चों के विचार

प्रयोग स्वयं के बच्चों पर

(i) लारेण्ट

(ii) ल्यूसीन

(iii) जेक्लीन

⇒ पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास आरोही क्रम में गुणात्मक रूप में होता है।

⇒ पियाजे के अनुसार "बालक वातावरण के साथ सम्बन्ध बनाते हुये अपनी समझ का विकास करता है।"

संवेगात्मक विकास की अवस्था:-

(1) संवेदीगामक या इन्द्रियगामक विकास:- 0-2 वर्ष

विशेषतायें:-

(i) बालक संवेदना तथा शारीरिक क्रियाओं के माध्यम से सीखता है।

(ii) बालक वातावरण से स्वयं को अलग समझता है।

(iii) व्यावहारिक बुद्धि का अभाव

(iv) स्मृति, अनुकरण, ध्यान व जिज्ञासा प्रवृत्ति का विकास

(v) क्रिया व प्रेरणा में सम्बन्ध सम्बन्ध स्थापित करता है।

(vi) वस्तु स्थायित्व की प्रवृत्ति 18-24 माह (कबूतर द्वारा वस्तु का नहीं ले जाना)

इस अवस्था के 6 भाग हैं :-

(1) सहज प्रतिवृत क्रिया ⇒ 0-30 दिन (चूसना, मुस्कराना)

(2) प्रमुख वृतीय प्रतिवृत्त ⇒ 1-4 माह (दोहराना)

(3) गौण प्रतिवृत्त क्रिया ⇒ 4-8 माह (वस्तु को पकड़ना, दोड़ना)

(4) गौण स्कीमेटा ⇒ 8-12 माह (अनुकरण करना, वस्तुओं की खोज)

(5) तृतीय प्रतिवृत क्रियायें ⇒ 12-18 माह तक - वस्तुओं के गुणों की खोज करना

(6) मानसिक संयोग द्वारा साधनों की खोज की अवस्था (वस्तु स्थायित्व की प्रवृत्ति)

(II) पूर्व संक्रियात्मक अवस्था (2-7 वर्ष) :-

- आत्मकेंद्रित (Ego Centerism) (2-4 वर्ष)
- अन्तः प्रज्ञात्मक (Intutive)

(1) बालक में मौलिक भाषा का संकेतों के माध्यम से सर्वाधिक विकास।

(2) बालक में अनुकरण, खेलना तथा अभिनय करने की प्रवृत्ति का सर्वाधिक विकास।

(III) सजीववाद (Animism) :-

(1) गतिशील वस्तुओं को सजीव समझना तथा भौतिक घटनाओं का मानवीकरण करना। जैसे - सूर्य आज उदास है।

(2) कलेक्टिव मोलोलो :- अपने आप से बातें करना।

(3) कलेक्ट्रीकरण :- वस्तु के एक ही पक्ष पर ध्यान देना।

(1) अहम् भाव- अपने ही विचारों को सही समझना तथा यह सोचना कि कोई वस्तु मेरा पीछा कर रही है। जैसे- बादल का साथ चलना।

(III) अन्तः प्रज्ञात्मक अवस्था (4-7 वर्ष) :-

(1) बालक सहज रूप से विचार करना प्रारम्भ कर देता है तथा साधारण मानसिक क्रिया करना। जैसे- जोड़ना, घटाना, भाग देना आदि।

(2) अनपलटन का दोष- नियमों को नहीं समझना घर दूरी स्कूल

(3) वर्गीकरण व क्रमबद्धता का अभाव

(IV) मूर्त (ठोस) संक्रियात्मक अवस्था (7-11 वर्ष) :-

(1) मूर्त रूप से चिंतन या विचार करना

(2) V. Imp. वस्तुओं का वर्गीकरण करेगा, सम्बन्ध स्थापित करेगा, तुलना करेगा विचारों में क्रमबद्धता।

(3) अहम् भाव को छोड़ देना।

(4) पलटन का गुण आजायेगा।

(5) नियमों की समझ आयेगी।

(6) संरक्षण की समझ (लम्बाई, चौड़ाई, दिशाओं, समय का ज्ञान)

(V) औपचारिक संक्रियात्मक अवस्था 12-15 वर्ष..... :-

1) अमूर्त चिंतन, अपसारी (हर पल सोचना) चिंतन, व्यवस्थित व योजनाबद्ध चिंतन का विकास।